Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

फसल मौसम सतर्कता समूह (क्राप वेदर वॉच ग्रुप) की बारहवीं बैठक की संस्तुतियॉं

दिनॉंक : 22 जुलाई, 2015
समय : 11.00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2015–16 की बारहवीं बैठक डा. आई.एन. मुखर्जी, सचिव, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 22 जुलाई, 2015 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में निदेशक मौसम विभाग, अमौसी, लखनऊ, च.शे.आ. कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर एवं न.दे. कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद के मौसम वैज्ञानिक एवं पूर्व धान प्रजनक, कृषि विभाग, गन्ना विभाग, मत्स्य विभाग एवं परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार (दिनांक 22 जुलाई से 28 जुलाई, 2015 तक) बंगाल की खाड़ी एवं अरब सागर में कम वायुदाब का क्षेत्र विकसित होने और नमी चक्रवाती परिसंचरण के माध्यम से ऊपरी सतह पर बरकरार रहने एवं क्षेत्रीय चक्रवात के शामिल होने से प्रदेश के सम्पूर्ण क्षेत्रों में दिनांक 23,24 एवं 25 जुलाई को हल्की से मध्यम वर्षा होने के आसार हैं। प्रदेश में सप्ताह के अंतिम 26 एवं 27 तिथियों में मध्यम से घने बादल छाये रहने के साथ ही हल्की से मध्यम वर्षा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में होने की सम्भावना है। शेष क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर कहीं–कहीं हल्की वर्षा के आसार हैं। इस सप्ताह प्रदेश में प्रमुखतया दक्षिण–पूर्वी एवं दक्षिण–पश्चिमी हवाएँ 8–10 किमी. प्रति घण्टे की औसत गति से चलने के आसार हैं। प्रदेश के सभी क्षेत्रों में अधिकतम तापमान सप्ताह के प्रारम्भिक दो दिनों में 33–35 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 25–27 डिग्री सेल्सियस रहने के आसार हैं जबकि वर्षा से आच्छादित दिनों में दिन का अधिकतम तापमान 30–32 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 24–26 डिग्री सेल्सियस रहने की सम्भावना है। प्रदेश की अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता औसत रूप से प्रारम्भिक एवं अंतिम दो दिनों में 80–90 प्रतिशत एवं न्यूनतम आर्द्रता 65–70 प्रतिशत और दिनांक 24,25 एवं 26 में अधिकतम आर्द्रता 85–95 प्रतिशत एवं न्यूनतम आर्द्रता 80–90 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। इस सप्ताह वातावरण आर्द्र रहेगा।

कृषि निदेशालय, उ.प्र. से दिनांक 21 जुलाई, 2015 तक प्राप्त वर्षा आंकड़ों के अनुसार प्रदेश के 75 जनपदों में अब तक की सामान्य वर्षा 285.3 मिमी. के सापेक्ष 250.1 मिमी. प्राप्त हुई है जो सामान्य की 87.7 प्रतिशत है। प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों के सापेक्ष सबसे अधिक वर्षा 264.9 मिमी. प्राप्त हुई है जो सामान्य से 11.4 प्रतिशत अधिक है। मध्य उत्तर प्रदेश में 210.2 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई जो सामान्य से 27.0 प्रतिशत कम है, पूर्वी उत्तर प्रदेश में 264.0 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई जो सामान्य से 22.0 प्रतिशत कम एवं बुन्देलखण्ड में सबसे कम वर्षा 187.3 मिमी. प्राप्त हुई जो सामान्य से 28.8 प्रतिशत कम है। अब तक प्राप्त वर्षा ऑकड़ों के अनुसार सामान्य से अधिक वर्षा (120 प्रतिशत अथवा अधिक) के अन्तर्गत 12 जनपद, सामान्य वर्षा (80–120 प्रतिशत) के अन्तर्गत 28 जनपद, सामान्य से कम (60–80 प्रतिशत) 22 जनपद, 10 जनपदों में न्यून (40–60 प्रतिशत) एवं 3 जनपदों में अति न्यून (40 प्रतिशत से कम) वर्षा प्राप्त हुई है। प्रदेश के मुजफ्फरनगर, शामली एवं मुरादाबाद जनपदों में सामान्य से 80 प्रतिशत अधिक वर्षा प्राप्त हुई है।

कृषि विभाग, उ.प्र. से प्राप्त आच्छादन आंकड़ों के अनुसार दिनांक 21 जुलाई, 2015 तक प्रदेश में कुल खरीफ आच्छादन लक्ष्य 95.18 लाख हे. के सापेक्ष 60.24 लाख हे. की प्रतिपूर्ति हो चुकी है जो लक्ष्य का 63.29 प्रतिशत है। धान का आच्छादन लक्ष्य 60.45 लाख हे. के सापेक्ष रोपाई की प्रतिपूर्ति 37.70 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 62.36 प्रतिशत है। खरीफ की अन्य फसलों में मक्का के आच्छादन लक्ष्य 7.74 लाख हे. के सापेक्ष 6.93 लाख हे. में प्रतिपूर्ति हुई है जो लक्ष्य का 89.50 प्रतिशत है। ज्वार की बुआई निर्धारित लक्ष्य 1.80 लाख हे. के सापेक्ष 1.16 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 64.43 प्रतिशत है। बाजरा की बुआई निर्धारित लक्ष्य 9.55 लाख हे. के सापेक्ष 4.67 लाख हे. हुई है जो लक्ष्य का 44.95 प्रतिशत है। दहलनी फसल की मुख्य फसल अरहर की बुआई 3.59 लाख हे. के सापेक्ष 2.20 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 61.44 प्रतिशत है। उर्द की बुआई के लक्ष्य 6.46 लाख हे. के सापेक्ष 3.98 लाख हे. में हो चुकी है जो लक्ष्य का 61.53 प्रतिशत है एवं मूँग का बुआई लक्ष्य 0.49 लाख हे. के सापेक्ष 0.33 लाख हे. में हो चुकी है जो लक्ष्य का 67.41 प्रतिशत है। तिलहनी फसल मूँगफली की बुआई का लक्ष्य 0.98 लाख हे. के सापेक्ष 0.76 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 77.05 प्रतिशत है। तिल की बुआई लक्ष्य 3.46 लाख हे. के सापेक्ष 2.22 लाख हे. में हो चुकी है जो लक्ष्य का 64.17 प्रतिशत है।

अतः प्रदेश में फसल एवं मौसम के इस परिप्रेक्ष्य में किसानों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैंः–

- वर्तमान मौसम रोपाई के लिये अनुकूल है अतः रोपाई युद्धस्तर पर करें।
- विलम्ब से धान की रोपाई करने पर अधिक अवधि वाली पौध (30–35 दिन) की रोपाई 2–3 पौध प्रति पुंज के स्थान पर 3–4 पौध की रोपाई प्रति पुंज करें। विशेष रूप से ऊसर एवं क्षारीय भूमियों में 3–4 पौध की रोपाई प्रति पुंज करें।
- रोपाई के बाद जो पौधे नष्ट गए हों उनके स्थान पर दूसरे पौधों को तुरन्त लगा दें ताकि प्रति इकाई पौधों की संख्या कम न होने पाये।
- स्री पद्धति से 1 हे. फसल की रोपाई हेतु मात्र 1000 वर्ग फुट क्षेत्रफल की पौध पर्याप्त है। नर्सरी की क्यारियॉ 4–5 इंच ऊँची रखें। स्री पद्धति के लिये 6 किग्रा. प्रति हे. बीज की नर्सरी में बुआई करें। स्री पद्धति की नर्सरी में जहॉ तक संभव हो देशी खाद का ही प्रयोग करें। 8–12 दिन अवधि की नर्सरी की रोपाई करें।
- दलहनी एवं तिलहनी फसलों की बुआई प्राथमिकता के आधार पर करें।
- वृक्षारोपण हेतु मौसम अनुकूल है अतः वृक्षारोपण करें।
- खरीफ 2015 के लिए फसलों के बीमा कराने की अवधि संशोधित राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना में 31 जुलाई तक है। इस योजना के अंतर्गत जिन किसानों के किसान क्रेडिट कार्ड चालू हैं वे अपनी फसलों का बीमा सम्बन्धित बैंक कर्मचारियों से करा लें।
- कृषि विभाग द्वारा चलायी जा रही पारदर्शी किसान योजना के अंतर्गत कृषि निवेश, कृषि यंत्र, बीज, कृषि रसायनों को प्राप्त करने हेतु अपना रजिस्ट्रेशन कराएॅ। किसान कृषि विभाग की वेबसाइट www.upagriculture.com पर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं।

धान की खेती

- बासमती धान की टाइप–3, बासमती–370, तारावड़ी बासमती आदि प्रजातियों को पश्चिमी उ.प्र. में जुलाई के अंतिम सप्ताह व पूर्वी उ.प्र. में अगस्त के प्रथम पक्ष में रोपाई करें जिससे दाने की गुणवत्ता व सुगन्ध का विकास अच्छी तरह से हो सके।
- प्रतिकूल मौसम के कारण अधिक अवधि वाली पौध की रोपाई विलम्ब से करने की दशा में चोटी काटकर रोपाई करें। इससे तना बेधक एवं हिस्पा आदि कीट का प्रकोप कम होगा।
- धान की रोपाई प्रत्येक वर्गमीटर में 50 हिल तथा प्रत्येक हिल पर 2–3 पौधे लगायें।
- संकरी तथा चौड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों के नियन्त्रण हेतु 2 इंच भरे पानी में रोपाई के 3–5 दिन के अन्दर ब्यूटाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. की 3–4 लीटर मात्रा अथवा प्रेटिलाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. की 1.60 लीटर मात्रा को प्रति हे. 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण हेतु मेटसल्फ्यूरान मिथाइल 20 प्रतिशत डब्लू.पी. 20 ग्राम, इथाक्सी सल्फ्यूरान 15 प्रतिशत डब्लू.डी.जी. 100 ग्राम, 2,4–डी इथाइल ईस्टर 38 प्रतिशत ई.सी. 2.5 लीटर में से किसी एक रसायन की संस्तुत मात्रा को प्रति हे. लगभग 500 लीटर पानी में घोलकर फ्लैट फैन नॉजिल से बुवाई के 25–30 दिन बाद छिड़काव करें।

मक्का की खेती

- मक्का की निराई, गुड़ाई तथा विरलीकरण सहित हल्की मिट्‌टी चढ़ाएॅ।
- 45–60 दिन की मक्का की फसल में नत्रजन की कुल संस्तुत मात्रा की एक चौथाई टॉप ड्रेसिंग के रूप में दें।

बाजरा की खेती

- कम वर्षा वाले स्थानों पर यह फसल सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है अतः बाजरा की संकुल प्रजातियों यथा आई.सी.एम.बी.–155, डब्लू.सी.सी.–75, आई.सी.टी.पी.–8203, राज–171, न.दे.एफ.बी.–3, व संकर प्रजातियों यथा पूसा–23, पूसा–322 तथा आई.सी.एम.एच.–451 की बुवाई करें।

अरहर की खेती

- अरहर की बुवाई मेढ़ों पर करना लाभप्रद है।
- अरहर की देर से पकने वाली प्रजातियों बहार, अमर, नरेन्द्र अरहर–1, आजाद, पूसा–9, मालवीय विकास, मालवीय चमत्कार, नरेन्द्र अरहर–2 की बुवाई इस माह में पूर्ण करें।

उर्द की खेती

- उर्द की शीघ्र पकने वाली संस्तुत प्रजातियों आई.पी.यू.–94–1, (उत्तरा), पंत यू–35, नरेन्द्र उर्द–1, पन्त यू–30, आजाद उर्द–2, शेखर–1, शेखर–2, शेखर–3, आजाद उर्द–3, डब्लू.बी.यू.–108 व पन्त उर्द–31 की बुआई करें।

मूँग की खेती

- मूँग की संस्तुत प्रजातियों पन्त मूँग–1, पन्त मूँग–3, नरेन्द्र मूँग–1, पी.डी.एम.–54, पंत मूँग–4, पी.डी.एम.–11, मालवीय ज्योति, सम्राट, मालवीय जनचेतना, मालवीय जनप्रिया, मालवीय जागृति, आशा, मेहा 99–125, टी.एम.–9937, मालवीय जलकल्याणी, एम.एच.–2.15, आई.पी.एम–2.3, श्वेता (के.एम.–2241) की बुआई करें।

तिल की खेती

- तिल की प्रजातियों यथा टा–4, टा–12, टा–13, टा–78, शेखर प्रगति व तरूण की बुवाई करें।

गन्ना की खेती

- जुलाई माह से गन्ने की लम्बवत् बढ़वार शुरू होती है। किल्ले फूटने/निकलने की प्रक्रिया पर रोक लगाने के लिये गन्ने की पंक्तियों में मिट्टी चढ़ायें। मिट्टी चढ़ाने से गन्ना गिरने से भी बच जाता है।
- चोटी बेधक कीट की निगरानी व नियंत्रण हेतु यौन गंध पास का प्रयोग करें।
- चोटी बेधक कीट की तृतीय पीढ़ी तितली के नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी या फोरेट 10 जी की 33 किग्रा. मात्रा प्रति हे. की दर से गन्ने की जड़ों के पास नम भूमि में डालें।
- गन्ना बेधक कीट जैसे तना बेधक व पोरी बेधक के नियंत्रण हेतु अन्ड परजीवी ट्राइकोग्रामा कीलोनिस के 50 हजार वयस्क कीट प्रति हे. 10 दिनों के अन्तराल पर जुलाई से सितम्बर तक पत्तियों में बांधें।
- पायरीला का प्रकोप होने पर तथा परजीवी (इपीरिकेनिया मेलानोल्यूका) न पाये जाने की स्थिति में क्वीनालफास 25 प्रतिशत घोल 0.80 ली. प्रति हे. 625 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

बागवानी

- आम की प्रजातियों यथा दशहरी, लंगड़ा, चौसा, आम्रपाली, मल्लिका, रटौल, गौरजीत, बंबई हरा तथा रामकेला आदि का रोपण करें। पौधे से पौधे की दूरी 10 या 12 मीटर रखें।
- आम के नवीन बाग लगाते समय परागण हेतु उपयुक्त किस्मों का 10 प्रतिशत रोपण अवश्य करें। दशहरी प्रजाति के साथ बाग में बम्बई हरा, गौरजीत को परागण किस्म के रूप में रोपित करें।
- अमरूद की उन्नत किस्मों यथा इलाहाबाद सफेदा, सरदार अमरूद, सुरखा व ललित का रोपण करें। पौधे से पौधे की दूरी 6 से 8 मीटर रखें।
- ऑवला की किस्मों यथा कृष्णा, कंचन, नरेन्द्र ऑवला–6, नरेन्द्र ऑवला–7 व नरेन्द्र ऑवला–10 का रोपण करें। पौधे से पौधे की दूरी 10 या 12 मीटर रखें।
- लीची की किस्मों यथा साही व कलकतिया की रोपाई करें। पौधे से पौधे की दूरी 10 से 12 मीटर रखें।
- नींबू की प्रजातियों कागजी, पंत लेमन तथा इंदौर सीडलेस का रोपण करें।
- आम के परिपक्व फलों की तुड़ाई 8–10 मिमी. लम्बी डंठल के साथ करें, जिससे फलों पर चेप न लगने पाये। इससे स्टेम इण्ड रॉट बीमारी नहीं लगती, पकने पर फल दाग रहित आकर्षक होते हैं तथा भण्डारण क्षमता 2–3 दिन बढ़ जाती है। तुड़ाई के समय फलों को चोट व खरोंच न लगने दें तथा मिट्टी के सम्पर्क से बचायें।
- पौध प्रवर्धन हेतु आम में ग्राफ्टिंग तथा लीची व नींबू में गूँटी बॉधने का कार्य करें।
- वर्तमान मौसम नींबू के कैंकर रोग के लिए अनुकूल है अतः रोकथाम हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 3–4 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर साफ मौसम में छिड़काव करें।
- केले की पुत्ती का रोपण करें। उपलब्धतानुसार केले की ऊतक संवर्धित प्रजाति जी–9 की पौध वरीयता पर लगायें।
- केले में एक तलवार पुत्ती को छोड़ते हुए शेष पुत्तियों की कटाई करें तथा फल वाले पौधों में स्टेकिंग (सहारा) दें।

सब्जियों की खेती

- बैंगन व मिर्च की तैयार पौध की मेड़ों पर रोपाई करें।
- वर्षा कालीन कद्दूवर्गीय सब्जियों यथा लौकी, तोरी, खीरा, सीताफल, करेला व टिण्डा की बुआई करें। अधिक पैदावार व लाभ लेने के लिये लता वाली सब्जियों के लिये मचान बनायें।
- भिण्डी, ग्वार एवं लोबिया की बुआई करें।
- टमाटर की अगेती संस्तुत किस्मों की बुवाई करें।

पशुपालन

- खरीफ चारा फसलों की बुवाई हेतु अनुकूल मौसम है अतः **ज्वार** की उन्नत किस्मों यथा मीठी ज्वार (रियो), पी.सी.–6, पी.सी.–9, यूपी.चरी–1 व 2, पंत चरी–3, एच.सी.–308, हरियाना चरी–171 व पंत चरी–4, **लोबिया** की किस्मों यथा रशियन जायन्ट, यू. पी.सी.–5286, 5287, एन.पी.–3, बुन्देल लोबिया–2, यू.पी.सी.–9202, यू.पी.सी.–4200, यू.पी.सी.–8705, **मक्का** की संकर किस्मों प्रोटीन, गंगा–2, गंगा–5, गंगा–7 तथा संकुल मक्का की किस्मों किसान, अफ्रीकन टाल और विजय तथा देशी मक्का की

टाइप–41 किस्मों **बाजरा** की किस्मों यथा जाइन्ट बाजरा, राजबो बाजरा, राज बाजरा तथा ग्वार की किस्मों यथा टाइप–2, एफ. एस.–227, एच.एफ.जी.–119, एच.एफ.जी.–156, बुन्देल ग्वार–1, बुन्देल ग्वार–2 तथा आई.जी.एफ.आर.आई.–2 की बुआई करें। गुणवत्तायुक्त पौष्टिक चारे हेतु ज्वार–लोबिया या मक्का–लोबिया की मिश्रित बुवाई करें।

- जिन पशुपालकों ने अभी तक पशुओं में गला घोंटू बीमारी की रोकथाम हेतु एच.एस. वैक्सीन से तथा लंगड़िया बुखार की रोकथाम हेतु बी.क्यू. वैक्सीन से टीकाकरण नहीं कराया है। वह पशुओं को शीघ्र टीका लगवायें। यह सुविधा सभी पशु चिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- वर्तमान मौसम में अन्तः एवं वाह्य परजीवियों का प्रकोप हो जाता है। अतः इन परजीवियों की रोकथाम हेतु पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर उपचार बनायें।
- पशुओं को मच्छर व डांस मक्खी से बचाव हेतु धुआँ करें।
- पशुओं को खनिज–लवण अवश्य दें एवं पर्याप्त मात्रा में 3–4 बार साफ पानी पिलायें।
- 12 प्रतिशत वार्षिक ब्याज की दर से 5 वर्ष तक ब्याज की प्रतिपूर्ति की जाने वाली कामधेनु, मिनीकामधेनु तथा माइक्रोकामधेनु योजना का लाभ पशुपालक अवश्य उठायें।
- कुक्कुटो में नमी की वजह से कॉक्सीडियोसिस का प्रकोप बढ़ जाता है। अतः दाना शुष्क स्थान पर भण्डारण करें तथा रोग होने पर एम्प्रोजोल (20 प्रतिशत) 30 ग्राम 100 ली. जल में घोलकर कुक्कुटों को पिलायें।
- मुर्गियों का बिछावन उलट–पलट कर उसमें 2 से 3 किग्रा. चूना प्रति 100 वर्गफिट की दर से मिलायें।
- बहु–वर्षीय घासों की रोपाई का कार्य तुरन्त करें।

मत्स्य पालन

- जिन मत्स्य पालकों के तालाबों में अवांछनीय मत्स्य प्रजातियां पाई जा रही है उनमें बार–बार जाल चलाकर मछलियों को निकाल लें।
- जिन मत्स्य पालकों ने अभी तक चूने एवं खाद का प्रयोग नही किया है, उन्हें सलाह दी जाती है कि वे शीघ्र अपने तालाब में बुझा हुआ चूना 2.5 कुं. प्रति हे. की दर से एवं गोबर की खाद 1 टन/हे. की दर से डालें एवं इनलेट/आउटलेट यदि चोक हों तो उन्हें साफ कर दें एवं इनलेट तथा आउटलेट पर जाली लगा दें तथा तालाब में पानी भरे।
- तालाब का जलस्तर 5 से 6 फुट बनाये रखें। कतला, रोहू, नैन प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन का यह उपयुक्त समय है। कतला, रोहू, नैन मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन करायें साथ ही आवश्यकतानुसार सिल्वर कार्प एवं ग्रास कार्प मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन भी करायें।
- उ.प्र. मत्स्य विकास निगम की हैचरियों पर तथा निजी क्षेत्र की हैचरियों पर मत्स्य बीज उपलब्ध है। उ.प्र. मत्स्य विकास निगम की हैचरियों पर मत्स्य बीज का वितरण कार्य हो रहा है। इच्छुक मत्स्य पालक अपने तालाबों में मत्स्य बीज का संचय करायें। संचित मत्स्य बीज को शरीर भार का 1–2 प्रतिशत पूरक आहार दें।
- मत्स्य पालक जनपद स्तर पर कार्यालय मत्स्य पालक विकास अधिकरण में मत्स्य बीज हेतु मांगपत्र दें ताकि समय से उनके तालाब में मत्स्य बीज का संचय हो सके।
- संचय की गई अंगुलिकाओं का पालन–पोषण करें तथा प्लवक की पर्याप्त मात्रा तालाबों में प्रत्येक माह खादीकरण कर बनाये रखें।
- मत्स्य बीज को 15 मिनट तक पानी में पैकेट बिना खोले रखें तत्पश्चात तालाब में पैकेट से मत्स्य बीज छोड़ें जिससे तापमान के अंतर से मत्स्य बीज को क्षति न हो।
- मत्स्य तालाब के बंधों पर नींबू, केला, करोंदा आदि का रोपण करें।
- थाई मॉगुर मछली पालना प्रतिबन्धित है। इसको न पाला जाये।

रेशम पालन

- शहतूती रेशम कीटपालक मानसून फसल के कीटपालन हेतु अपने कीटपालन घरों व उपरकणों का विशुद्धीकरण 2 प्रतिशत फार्मलीन घोल से विभागीय कार्मिकों की देख–रेख में कर लें।
- टसर कीटपालक अर्जुन, आसन पौधों के नीचे भूमि पर 1 भाग ब्लीचिंग पाउडर व 9 भाग चूना मिला पाउडर का छिड़काव उद्यानों में कर लें।
- रेशम फार्मों की सुरक्षा हेतु बबूल की हेज तैयार करने हेतु फार्मों के चारों तरफ खाई में बबूल बीज की बुवाई शीघ्र सम्पन्न करें।
- शहतूत उद्यानों के कर्षण कार्य के पश्चात निर्धारित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों के मिश्रण का कार्य शीघ्र पूर्ण कर लें।
- मानसून सत्र का वृक्षारोपण जारी रखें तथा पौध रोपण के पश्चात् चारों तरफ की मिट्टी को दबा दें। नये पौध रोपण करते समय पौधों से 90 प्रतिशत पत्ती हटा दें।
- अरण्डी उत्पादक उन्नत किस्म के बीज प्राप्त कर तैयार की गयी भूमि में अरण्डी की बुआई करें।

- रेशम कीटपालन के इच्छुक कृषक अपने नजदीकी रेशम अधिकारी/प्रभारी से सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त कर कीटपालन कार्य करें।

वानिकी

- पौधशाला में अंकुरण क्यारियॉ तैयार कर आम, गुलमोहर, महुआ, कटहल, जामुन, कंजी, नीम आदि के बीजों की बुआई शीघ्र कर लें। अंकुरित पौधों को रूट ट्रेनर/थैलियों में प्रतिरोपित कर छायाघर में रख दें।
- मौसम अनुकूल है अतः क्षेत्र में पौध रोपण का कार्य शीघ्र पूर्ण करे लें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक 29 जुलाई, 2015 को प्रातः 11:00 बजे आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।

नोटः

- क्राप वेदर वाच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ वेबसाईट www.upcaronline.org पर भी उपलब्ध है।
- क्राप वेदर वॉच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ इफको किसान संचार लिमिटेड के द्वारा प्रदेश के 9 लाख कृषकों को वॉयस एस.एम.एस. के रूप में कृषकों को प्रेषित की जा रही हैं।
- आंचलिक मौसम केन्द्र, मौसम विभाग, अमौसी द्वारा मुफ्त टेलीफोन सेवा प्रारम्भ की गई है, जिसका नम्बर 18001801717 है। अतः कृषक मौसम सम्बन्धी जानकारी इस फोन नम्बर पर प्राप्त करें।